REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. लवकुश सिंह
प्रधानाचार्य महर्षि दुर्वासा इन्टर कालेज, ककरा, दुबावल, प्रयागराज (इलाहाबाद)

सारांशः–

प्रस्तुत शोध पत्र में सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया हैं। इस हेतु शोधार्थी ने इलाहाबादके कुल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें 60 तो आरक्षित वर्ग व 60 सामान्यवर्ग के विद्यार्थियों को चयनित किया गया। इस शोध प्रदत्तों के संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण जो कि बाकर मेंहदी द्वारा निर्मित परीक्षण है, जिसे प्रयोग किया। सांख्यिकी विश्लेषण हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में सामान्य एवं आरक्षित वर्ग विद्यार्थियों में सृजनात्मकता में काफी अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्दः–सामान्य एवं आरक्षित वर्ग, सर्जनात्मकता।

प्रस्तावनाः–

सृजनात्मकता का सम्बन्ध प्रमुख रूप से मौलिकता या नवीनता से है। समस्या पर नय ढंग से सोचने या समाधान खोजने से सजनात्मकता परिलक्षित होती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि सृजनात्मकता वह योग्यता है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विद्वतापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने तथा विचार करने में समर्थ बनाती है। प्रचलित ढंग से हटकर किसी नए ढंग से चिन्तन करने तथा कार्य करने की योग्यता ही सृजनात्मकता है।

ड्रेवहल के शब्दों में "सृजनात्मकता वह मानवीय योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।"

सृजनात्मक मानव के क्रियाकलापों एंव निष्पत्ति के लिए आवश्यक है। सृजनात्मक का अर्थ वैज्ञानिकों या कलात्मक सर्जन से नहीं है, सृजनात्मक किसी भी व्यक्ति की क्रिया में पाई जाती है। समाज में कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के कार्य या व्यवसाय में सृजनात्मकता पाई जाती है। कोई भी मुक्त अभिव्यक्ति जो बालक भाषा, दृश्य, कला, संगीत, गति एंव गत्यात्मकता के द्वारा व्यक्त करता है तथा अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता है इससे उससे प्रतिबोधात्मक स्पष्टता आती है एंव अभिव्यक्ति हेतु उसमें संवेगात्मक गहनता आती है, बालक के व्यवहार में यहीं परिवर्तन सृजनात्मकता कहलाता है।

सजृनात्मकता व्यक्ति का ऐसा गुण होता है जिसमें परम्परागत पद्धतियों से अलग हटकर नवीनता एवं मौलिकता का समावेश होता हैं। कोई कार्य इस प्रकार से सम्पादित किया जाए कि उस कार्य को किसी और ने न किया हो तब वह कार्य सजृनात्मकता माना जाता हैं। जैसे मानव का चॉद पर रखा पहल कदम, नये–नये आविष्कार, इन्टरनेट कम्प्यूटर दूरभाष के आधुनिकतम साधन, कृषि, विज्ञान व वाणिज्य में प्रगति आदि सर्जनात्मकता की ही देन हैं। यद्यपि व्यापक तौर पर सर्जनात्मकता में ही मौलिकता के अतिरिक्त अन्य घटक भी शामिल होते हैं जैसा गिलफोर्ड ने लिखा है ''सर्जनात्मकता बालक में न केवल मौलिकता अपितु नम्यता, प्रवाहिता और प्रेरणात्मक स्वभाव के गुण भी 'शामिल होते हैं।''

वस्तुतः सृजनात्मकता जीवन की सृजनात्मकता अभिव्यक्ति है। सृजनात्मकता से आशय मनुष्य की उस क्षमता से है जो कुछ नया व मौलिक कार्य करने हेतु प्रेरित करती हैं। प्रत्येक प्राणी में अपने प्रजातीय गुणों के अनुसार सृजनशीलता होती हैं। किन्तु मनुष्य में अपनी उच्च मानसिक योग्यताओं के कारण सृजनशीलता अपेक्षाकृत अधिक होती हैं। कुछ व्यक्ति अधिक सृजनशील होते है तथा कुछ कम।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ''सृजनात्मक'' सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, सम्मोहन व चिन्ताकर्षक प्रकरण हैं, क्योंकि मानव समाज के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित व परिवर्तित करने वाले आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं तकनीकी आदि विविध क्षेत्रों के विभिन्न आयामों में द्रुतगति से हुई प्रगति वस्तुतः व्यक्ति विशेष की "सृजनात्मक योग्यता'' पर ही आधारित हैं। मानव में सृजनात्मकता शक्ति होती है जिसके कारण समाज के विकास में सहायता मिलती है।

बहुत से मानसिक क्रियाकलाप सृजनात्मकता पर आधारित हैं। जब कवि कोई अच्छी कविता लिखता है या चित्रकार अपने भावों को कलाकृति के द्वारा प्रकट करता हैं अथवा कोई इंजीनियर नई मशीन बनाता है तब वह अपनी सृजनात्मक शक्ति का उपयोग करते हैं। परिवर्तन मानव जीवन का स्वभाव रहा हैं।

मानसिक योग्यता एंव सृजनात्मकता में एक परस्पर निर्भरता होती है। जैसे–जैसे बालक बड़ा होता है। उसकी मानसिक योग्यता का विकास होने लगता है। मानसिक योग्यता के विकास पर पर्यावरण का प्रभाव अधिक होता है। इसके साथ–साथ सृजनात्मकता का भी विकास होता है। जैसे–जैसे मानसिक योग्यता का विकास होता है वैसे–वैसे सृजनात्मकता का भी तेजी से विकास होने लगता है अथवा सृजनात्मकता का विकास करने पर मानसिक योग्यता विकसित हो जाती है अर्थात् हम यह भी कह सकते हैं कि बुद्धिलब्धि और सृजनात्मकता एक दूसरे के पूरक भी हो सकते हैं। सृजनात्मकता लगभग सभी प्राणियों में पाई जाती है किसी में कम तो किसी में अधिक। जैसे अध्यापक, कर्ल्क, कृषक, औद्योगिक, कर्मचारी, श्रमिक, माता–पिता, रसोईयां आदि सभी अपने–अपने क्षेत्रों में सृजनशील है तथा देश और समाज को नवीन विधियोगं से कार्य करने में लाभकारी है। इनमें पर्याप्त सृजनात्मकता पाई जाती है। अतः यह स्पष्ट है कि समस्त व्यवसायों में अथवा क्षेत्रों में सृजनशील व्यक्ति होते हैं किन्तु यह आवश्यक नहीं कि एक सृजनशील व्यक्ति अपने क्षेत्र के अलावा अनय क्षेत्रों उतना ही सृजनशील हो। इस प्रकार सृजनशीलता से बुद्धिलब्धि का विकास होता है और बुद्धिलब्धि से सृजनशीलता का विकास होता है। यह एक दूसरे पर निर्भर प्रतीत होते हैं।

सृजनात्मकता के प्रमुख चार तत्व निम्नवत है–

1. **प्रवाह–** प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गई समस्या से संम्बधित अधिकाधिक विचारों या प्रत्युत्तरों की प्रस्तुति से हैं।
2. **विविधता–**विविधता से तात्पर्य किसी समस्या पर दिए प्रत्युत्तरों या विकल्पों में विविधता होने से है।
3. **मौलिकता**–मौलिकता से अभिप्राय व्याक्ति के द्वारा प्रस्तुत किए गये विकल्पों या उत्तरों का असामान्य अथवा अन्य व्यक्तियों के उत्तरों से भिन्न होने से है।
4. **विस्तारण**–विस्तारण से तात्पर्य दिए गये विचारों या भावों की विस्तृत व्याख्या, व्यापक पूर्ति या गहन प्रस्तुतीकरण से होता है।

वर्तमान समय में तीव्र गति से हो रहे वैज्ञानिक, तकनीकि तथा औद्योगिक प्रगति व विकास के आधुनिकीकरण ने मानव जीवन को इतना जटिल तथा समसयाग्रस्त बना दिया है कि इन समस्याओं के समाधान के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है। आज के समस्याग्रस्त जटिल समाज तथा प्रतियोगितापूर्ण संसार में सृजनात्मक व्यक्तियों की अत्यन्त मॉग हे। वैज्ञानिक तथा तकनीकि उपलब्धियों को अधिकाधिक अर्जित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सृजनात्मक व्यक्तियों को खोजना एक राष्ट्रीय आवश्यकता बन गई है।

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में सृजनात्मकता को भी एक कारक के रूप में रखा गया है।

अध्ययन के उद्देश्यः–

1. सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मकता अध्ययन करना।
2. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलानात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता के स्तर को ज्ञात करना।
4. माध्यमिक स्तर के आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता के स्तर को ज्ञात करना।
5. लिगं भेद के आधार पर सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता के स्तर की तुलना करना।
6. आवासगत भेद के आधार पर सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मक स्तर की तुलना करना।
7. लिगं भेद के आधार पर आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता के स्तर की तुलना करना।
8. आवासगत भेद के आधार पर आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता के स्तर की तुलना करना।
9. प्राप्त आंकडो, समंको की सांख्यकीय व्याख्या एवं विष्लेषण करना।
10. निष्कर्ष, सुझाव, और शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत करना।

शोध की परिकल्पनाएं :–

1. समग्र सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अतंर नहीं है।
2. समग्र ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियो ं की सृजनात्मकता मे कोई सार्थक अतंर नहीं हैं।

साहित्यावलोकनः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा विदेशो ं मे ं हुए शोध व भारत में हुए शोध कार्यो का अध्ययन किया गया जैसे सिम्पसन एवं नेन्सी डे (1999) : ''प्रतिभाशाली छात्रो ं की सर्जनात्मकता प्रेरणा एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन'' प्रतिभाशाली छात्रो ं की शैक्षिक उपलब्धि का सर्जनात्मकता से सीधा सम्बन्ध होता है।

जेम्स एनीज (2001): ''सर्जनात्मकता विचार पर सामाजिक सांस्कृतिक अन्तर के प्रभाव का अध्ययन।'' निष्कर्ष अनुसूचित जनजाति के छात्रो ं की सृजनात्मकता विचारधारा सवर्णो की तुलना में कम होती हैं। इसी प्रकार से भारत के शोध में नारिया, सरिता (2005): राजस्थान के उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर तनाव एवं दुश्चिता का अध्ययन।ß मे ंपाया गया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओ ं में अधिक सर्जनात्मकता पायी जाती हैं।

शर्मा, श्वेता (2006): मूकबधिर बालकों की सर्जनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन।'' निष्कर्ष में यह पाया गया कि मूकबधिर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि व सर्जनात्मकता में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया।

सोनी, संगीता (2010): ''उच्च प्राथमिक स्तर पर मूकबधिर तथा सामान्य बालकों की सर्जनात्मकता तथा कलात्मकता का तुलनात्मकता अध्ययन।'' निष्कर्ष मे ंपाया गया कि मूक बधिर बालकों की सर्जनात्मकता तथा शैक्षिक उपलब्धि मे ं कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं हैं इसी प्रकार से पानीगर, कविता (2009): निजी एवं राजकीय माध्यमिक स्तर की छात्राओ ं की सर्जनात्मकता का तुलनात्मकता अध्ययन।'' इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि निजी एवं राजकीय विद्यालय के माध्यमिक स्तर की छात्राओं की सर्जनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया गया। शोध विधि प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्रा द्वारा जौनपुर शहर के कुल 120 विद्यार्थियो ं जो 3 राजकीय व 3 निजी विद्यालयो ं से लिया गया। उपकरण प्रस्तुत श्शोध में शोधकर्त्रा ने मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया है जो कि बाकर मेंहदी द्वारा निर्मित परीक्षण हैं। सांख्यिकी प्रस्तुत अध्ययन मे ंउपकरणों के माध्यम से संग्रहित किये गये प्रदत्तों का सारणीयन किया गया तत्पश्चात टी–परीक्षण का उपयोग प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या परिकल्पना संख्या 1

सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियो ं की सृजनात्मकता का तुलानात्मक अध्ययन करना।

सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण सारणी संख्या :– 1

क्र. संख्या	क्षैत्र	स्मूह	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	05/01 पर सार्थकता
1.	प्रवाहिता आयाम	आरक्षित वर्ग	52.99	17.50	2.74	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
		सामान्य वर्ग	56.17	21.49		
2.	लचीलापन आयाम	आरक्षित वर्ग	31.66	11.28	2.72	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
		सामान्य वर्ग	34.40	13.57		
3.	मौलिकता आयाम	आरक्षित वर्ग	18.87	6.2	3.94	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
		सामान्य वर्ग	21.98	5.1		

सारणी संख्या 1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि क्षेत्र प्रवाहिता आयाम मे ं सामान्य वर्गके विद्यार्थियो ं के प्राप्तांकों का मध्यमान 56.17 प्राप्त हुआ जो कि वरीयता सूची में प्रथम स्थान पर हैं। अर्थात सामान्य वर्गविद्यार्थियो ं की सृजनात्मकता मे ंसार्थक अन्तर पाया गया हैं। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना संख्या : 2

ग्रामीण व शहरी क्षैत्र के आरक्षित वर्ग व सामान्य वर्गविद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।

क्र. संख्या	क्षैत्र	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	05/01 पर सार्थकता
1.	प्रवाहिता आयाम	ग्रामीण	43.61	10.55	2.15	0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
		शहरी	54.99	13.61		
2.	लचीलापन आयाम	आरक्षित वर्ग	32.84	8.47	2.76	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
		सामान्य वर्ग	36.73	9.19		
3.	मौलिकता आयाम	आरक्षित वर्ग	15.48	4.58	3.85	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
		सामान्य वर्ग	37.46	10.58		

सारणी संख्या 2 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि क्षेत्र प्रवाहिता आयाम में शहरी क्षेत्र के सामान्य वर्ग के विद्यार्थियो ं का मध्यमान 54.99 प्राप्त हुआ जो कि वरीयता सूची में अधिकतम अर्थात ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के आरक्षित वर्ग व सामान्य वर्गकेविद्यार्थियो ं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया गया अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

निष्कर्षः–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्रा ने यह पाया कि आरक्षित वर्ग व सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों में सृजनात्मक में काफी अन्तर पाया गया अतः ग्रामीण क्षैत्र के आरक्षित वर्गकी सृजनात्मक को बढ़ावा देने के लिए वहां के शिक्षकों व अभिभावको का प्रयास करने की आवश्यकता हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख परिणाम एवं निष्कर्ष निम्नवत है

1. सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग का सृजनात्मकता स्तर एक समान है अर्थात सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग के सृजनात्मकता स्तर पर उनकी सामाजिक स्थिति का कोई प्रभाव नही होता है।
2. सामान्य वर्ग के छात्रो–छात्राओं के सृजनात्मकता पर उनकी लैंगिक स्थिति का प्रभाव पडता है तथा छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा सृजनात्मकता की अधिकता है।
3. सामान्य वर्ग के ग्रामीण छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता एक समान है अर्थात सामान्य वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता पर उनकी आवासीय स्थिति का कोई प्रभाव नही पडता है।
4. आरक्षित वर्ग के छात्रो एवं छात्राओं के सृजनात्मकता पर उनकी लैंगिक स्थिति का प्रभाव पडता है। तथा आरक्षित वर्ग की छात्राये इसी वर्ग के छात्रों की तुलना मे अधिक सृजनशील हे।
5. आरक्षित वर्ग के ग्रामीण छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता एक समान है अर्थात आरक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता पर उनकी आवासीय स्थिति का कोई प्रभाव नही पडता है।
6. सामान्य वर्ग के छात्रो एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों का सृजनात्मकता एक समान है अर्थात सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग के सृजनात्मकता पर उनकी सामाजिक स्थिति का कोई प्रभाव नही होता है।
7. सामान्य वर्ग के छात्राओ एवं आरक्षित वर्ग के छात्राओं की सृजनात्मकता एक समान है अर्थात सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग के सृजनात्मकता पर उनकी सामाजिक स्थिति का कोई प्रभाव नही होता है।
8. सामान्य वर्ग के ग्रामीण छात्र–छात्राओं एवं आरक्षित वर्ग के ग्रामीण छात्र–छात्राओ के सृजनात्मकता एक समान है अर्थात ग्रामीण छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता पर उनकी सामाजिक स्थिति का कोई प्रभाव नही पडता है।
9. सामान्य वर्ग के शहरी छात्र–छात्राओं एवं आरक्षित वर्ग के शहरी छात्र–छात्राओ के सृजनात्मकता एक समान है अर्थात शहरी छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता पर उनकी सामाजिक स्थिति का कोई प्रभाव नही पडता है।

उपसंहार :–

समग्र रूप से सामान्य और आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के सृजनात्मकता में जहॉ समानता परिलक्षित हुई है, वही दोनो समूहों मे लैगिक आधार पर सृजनात्मकता में अन्तर प्राप्त हुआ, प्रत्येक समूह में छात्रायें, छात्रों की अपेक्षा अधिक सृजनशील परिलक्षित हुई है। प्रस्तुत अध्ययन के

निष्कर्ष निश्चित ही सामान्य एवं आरक्षित वर्ग की सृजनात्मकता के सन्दर्भ मे समानताओं एवं असमानताओं को इंगित करते है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा के क्षेत्र में ही नही अपितु समाज के हर क्षेत्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते है। सरकार, समाज, शासन–प्रशासन और समाज सेवी संस्थाओं को माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। विद्यालयों में ऐसा वातावरण बनाना चाहिए कि बालको की इन समस्याओं का निराकरण हो सके।इस प्रकार वर्तमान शोध–अध्ययन के परिणाम उन शिक्षाशास्त्रियों, प्रशासकों, सलाहकारों और अध्यापकों के लिए उपयोगी होगे जो माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते है तथा उच्च विद्वतापूर्ण उपलब्धि एवं अन्य मनोसामाजिक चरों को प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को प्ररित करते है।

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थः–

छात्र–छात्राओं की मानसिक योग्यता एंव सृजनात्मकता के प्रभाव के लिए इस क्षेत्र में और अधिक अनुसंधान कार्य अपेक्षित हैं। बालक राष्ट्र के कर्णाधार होते हैं जो शिक्षा पाकर अपने आपकों पूर्ण विकसित और श्रेष्ठ नागरिक बनाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं–

1. छात्र छात्राओं के अपने ज्ञान में पूर्ण वृद्धि करनी चाहिए ताकि उनका मानसिक विकास हो।
2. जितनी भी मानसिक योग्यता हो उसका पूर्ण उपयोग अपने समस्त कार्यों तथा परिस्थितियों में करना चाहिए ताकि उनमें नवीनता विकसित हो और आत्मविश्वास बढ़े।
3. छात्र–छात्राओं को अपने कार्य व्यवहार में नवीनता, मौलिकता, चिन्तनशीलता तथा काल्पनिकता आदि गुण विकसित करके सृजनात्मकता को विकसित करना चाहिए।
4. बालकों को उपलब्ध साधनों का भरपूर प्रयोग तथा हर बार कुछ नया करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।
5. छात्र एंव छात्राओं को सदैव स्वअनुशासन में रहकर प्रसन्नचित्त रहना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. गुप्ता, एस.पी. (2007): ''सांख्यिकी विधियाँ'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. सरीन व सरीन (2008): ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'', विनोद पुस्तक मदिंर, आगरा।
3. सुखिया, एस.पी. एवं मेहरोगा, पी.बी. (1984): ''ष्शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मदिंर, आगरा।
4. कपिल, एच.के. ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मदिंर, आगरा।
5. पाठक, पी.डी. (2008): ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मदिंर, आगरा।
6. बुच, एम.बी. (1983–1988): ''फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'', एन.सी.आर.टी. नई दिल्ली, वोल्यूम 1,2।
7. बुच, एम.बी. (1988–1992): ''फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'', एन.सी.आर.टी. नई दिल्ली, वोल्यूम 1,2।
8. भारतीय आधुनिक शिक्षा (जुलाई, 1988) पृ.संख्या 29–34।
9. वर्मा, प्रीती एवं श्रीवास्तवः डी.एन. (1991): ''मनोविज्ञान एवं शिक्षा मे सांख्यिकी'', विनोद पुस्तक मदिंर, आगरा।
10. शर्मा, आर.ए. (2009): ''शिक्षण अधिगम'', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ–2500।
11. मेहन्दी बाकर मैनुअल सृजनात्मक चिन्तन श्शाब्दिक परीक्षण 1973।
12. रेना एम.के. ए स्टडी ऑफ सेक्स डिफरेन्सेस इन क्रियेटिविटि रिसर्च देयर रीजनल कॉलेज ऑफ द एजूकेशन, अजमेर 1966।
13. राय, पारसनाथ एवं भटनागर, चांद अनुसंधान–परिचय, लक्ष्मी नारायण, अग्रवाल आगरा।
14. वर्मा लोकेश कुमार विनोदी प्रकृति के विद्याथियों कीसृजनात्मकता का अध्ययन'', कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, राजस्थान बोर्ड, जनरल ऑफ एजूकेशन अक्तूबर–दिसम्बर 1977, वाल्यूम–8

डॉ. लवकुश सिंह
प्रधानाचार्य महर्षि दुर्वासा इन्टर कालेज, ककरा, दुबावल, प्रयागराज (इलाहाबाद)